श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ७

दिसम्बर

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ध्यान करने तत्पर ध्याता ने अपने शुद्ध आत्मद्रव्य को एवं..... को जान लिया है ।
२. पुण्यशालीओ सचमुच जिनेश्वर की स्नात्रक्रिया प्रसंग पर ..... का आलेखन करते हैं ।
३. मुनिवरों के तप, सिद्धि के सुख वगैरह पदार्थो का वर्णन..... में किया गया है ।
४. श्री जयसिंह सूरि के उपदेश से श्री शत्रुंजय का संघ निकालकर..... ने थाली की प्रभावना की ।
५. जीव अपने आत्म प्रदेशों द्वारा पुद्गल ग्रहण करता है वह..... कहलाता है ।
६. सयोगी गुणस्थान में शुद्ध..... होता है ।
७. जिनागमो में ..... के सभी रहस्य स्पष्ट करने में आये हैं ।
८. शांति कलश ग्रहण करने वाला पुष्पहार कंठ में धारण करके शांति की ..... करे ।
९. नौवे गुणस्थानक के छट्ठे भाग में साधक अनुक्रम से चार प्रकृतियों को ध्यान से उत्पन्न हुई..... से खपाता है ।
१०. अपने सुकृत्यों से ..... वंशजो ने जैनधर्म का नाम रोशन किया है ।
११. दीर्घकालिकी संज्ञा..... जीवों को होती है ।
१२. आगम का..... निश्चितरुप से त्रिविध दुःखो का नाश कर सिद्धिपद को पाता है ।
१३. स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान..... हि जिनाभिषेके ।
१४. वि.स. १२०२ में यशचन्द्र को ..... नगर में आचार्यपद से विभुषित किया ।'
१५. ..... देवताओं का जघन्य आयुष्य एक पल्योपम है ।
१६. द्वितीय शुक्लध्यान के योग से साधु कर्मरुपी काष्ठ को जलाकर अंत में ..... इन दो प्रकृतियों का नाश करता है ।
१७. श्री ज्ञाता सूत्र में कथाओं द्वारा भिन्न भिन्न तरीके से ..... दिया है ।
१८. समानन सामाचारी के विचार को तोड डालने के लिये..... का वातावरण तैयार करने में आया ।
१९. कौनसी गति में किस किस गति में से जीव आता है.....कहलाती है ।
२०. आसप की पुत्री लक्ष्मी और पुत्र आंबड ने भक्ति से ..... लिखवाया था ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. पल्योपम के आठवें भाग जितना जघन्य आयुष्य किनका होता है ?
२. दिगंबर और श्वेतांबरों के बीच के ऐतिहासिक वाद विवाद में श्वेतांबर संप्रदाय के कर्णधार कौन थे ?
३. संसार के मायाजाल में जीव कैसे फंसता है और कैसे मुक्त हो सकता है ?
४. शांतिकलश किस हाथ में ग्रहण किया जाता है ?
५. शुक्लध्यान का दूसरा भेद कौन से गुणस्थानक में होता है ?
६. लोक के अंतिम छोर पर रहे हुए कौन से जीवों को तीन-चार-पांच या छः दिशाओं का आहार मिलता है ?
७. बचपन में श्री जयसिंह सूरि का लाड का नाम क्या था ?
८. संयम लेने वाले जीवों को अनुकुल उपसर्ग सहन करने की बात किस सत्र में समझाई गई है ?
९. श्रीमाली श्रेष्ठि धर्मदास ने कौन से जिनालय का जिर्णोद्धार श्री कल्याणसागरसूरि के उपदेश से कराया ?
१०. शांतिकलश का पानी कहाँ लगाना चाहिये ?
११. सब स्थावर कैसे होते हैं ?
१२. तीन विशेषण युक्त शुक्लध्यान को ध्याते ध्याते साधक क्या प्राप्त करता है ?
१३. राजा कुमारपाल ने कहाँ के बुनकरों को पाटण में बसाने का निश्चय किया ?
१४. श्री औपपातिक सूत्र में किस राजा ने प्रभु की देशना सुनी उसका वर्णन है ?
१५. सम्यग् दर्शन वालों की संज्ञा कौनसी संज्ञा कहलाती है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) गच्छंति २) धत्ते ३) पठन्ति ४) चतुष्कं ५) भयणा ६) पुंवेदश्च ७) थिरा ८) गृहित्वा ९) त्रिषष्ठि १०) कोविदैः ११) विघ्नयो १२) कल्याणभाजः १३) विगले १४) भवेन्नहि १५) दीह १६) अहं १७) सृजन्ति १८) वअेसिया १९) षंढत्व २०) निरत

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) विकलेन्द्रिय	१) चांदण राणा	६) आशधर	६) श्री नंदी सूत्र
२) पांच ज्ञान	२) जालिकुमार	७) अनुत्तर विमान	७) वीतराग
३) मांगलिक स्तोत्र	३) श्रीवत्स	८) तिर्यंच पंचेन्द्रिय	८) हेतुवादोपदेशिकी
४) सोमचंद	४) शुभदत्त	९) वर्धमानक	९) पुष्पवर्षा
५) सूक्ष्म संपराय	५) व्यंतर	१०) क्षपक	१०) कीट्टीकरण

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. नौवे गुणस्थानक के प्रथम भाग में साधक कितनी कर्म प्रकृतियां खपाते हैं ?
२. श्रीप्रज्ञापना सूत्र में कितने पदार्थों का वर्णन किया गया है ?
३. श्रीजयसिंहसूरी ने उपदेश देकर किस साल में राउत वीरचंद को जैन बनाया ?
४. स्नात्र मंडल में शांतिकलश कितनी चीजों के साथ ग्रहण करना है ?
५. किमाहार श्री दंडक प्रकरण का कितनावा द्वार है ?
६. सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक में कितनी प्रकृति का बंध होता है ?
७. बल कितने हैं ?
८. श्री जयसिंहसूरि का ललाट कितना लंबा था ?
९. पर्याप्ति द्वार में देवताओं के कितने दंडक बताये हैं ?
१०. दूसरे भेदवाला शुक्लध्यान कितने विशेषणों से युक्त होता हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. क्षपक वीतराग होता है, विशेष राग द्वेष रहित होता है ।
२. श्री सूर्य चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र में चंद्र सूर्य वगैरह के पूर्वभवादि का वर्णन किया है ।
३. अखिल विश्व का मंगल है सभी सत्कार्य में तत्पर बनो ।
४. श्रेष्ठि दाहड कोटि ध्वज का गौरव रखते थे ।
५. स्थावर के पाँच दंडक को पाँच पर्याप्ति होती है ।
६. आगम निर्वाणरुपी नगर तक पहुँचने के मार्गरुप कहलाते हैं ।
७. राजा वीरदत्त निःसंतान था ।
८. ज्योतिष देवों का जघन्य आयुष्य पल्योपम का चोथा भाग जितना होता है ।
९. कटारमल ने सूरि के उपदेश से हस्तिनापुर में जिनप्रादाद बंधवाया ।
१०. कौनसा जीव मरकर किस गति में जायेगा वह गति कहलाती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. दुषम काले जिन बिंब जिनागम भवियण को आधारा ।
२. अज्ञंचलगच्छ के संगठन के लिये तो उन्हें मेरुदंड की उपमा दी जा सकती है ।
३. अपृथकत्व याने पृथकत्वरहित है ।
४. आहार याने यहाँ मुख से लेने का आहार समझना नहीं ।
५. आगम का सात्विक आराधक निश्चय रुप से त्रिविध दुःखो का नाश कर सिद्धिपद को पाते हैं ।
६. विघ्न रुपी बेलों का छेदन हो जाता है और मन प्रसन्नता को पाता है ।
७. ऐसे कलुषित वातावरण में मूल प्रस्ताव दूर फेका गया ।
८. यह शुद्धि कैसी है ? मुक्ति रुप सुख को बताने वाली है ।
९. वह बाह्य-अभ्यंतर शुद्ध हुआ होना चाहिये ।
१०. नागडा वंशजो ने अपने सुकृत्यो से जैनधर्म का नाम रोशन किया है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. बृहद्शांति की २०, २१, २२, २३ वीं गाथा का अर्थ समझाओ ।
२. जेसिंग की राजा सिद्धराज से मुलाकात व उन्हें राजा की प्रेरणा ३) पर्याप्ति द्वार
४. दस पयन्ना का संक्षिप्त वर्णन ५) क्षीणमोह गुणस्थानक

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com